समीक्षा

अंतर्जाल की दुनिया में डॉ. मधु संधु

सम्पादक : डॉ. दीप्ति

1. **धर्मपाल महेंद्र जैन–** हिन्दी के कुछ वरिष्ठ रचनाकार, जिन्होंने खामोशी के साथ बेमिसाल काम किया पर श्रेय लेने की परंपरा से नहीं जुड़े उनमें एक प्रमुख नाम है डॉ. मधु संधु। ...मधु जी के गद्य में कविता की लय है और पंजाब की मस्ती। ...समकालीन कथा साहित्य का वे एक मोबाइल पुस्तकालय हैं ।

2. **सुधा ओम ढींगरा–** मधु जी की काव्यानुभूतियाँ सबकी अनुभूतियाँ बन, पूरी स्त्री जाति का नेतृत्व कर उनकी आवाज बनती हैं।

3. **अर्चना पेन्यूली–** डॉ. मधु संधु ने यह सिद्ध कर दिया है कि अंतर्जाल या डिजिटल प्लेटफॉर्म्स केवल मनोरंजन का साधन नहीं होते... डॉ. संधु के ऑनलाइन पत्रिकाओं में प्रकाशित साहित्य और उनके द्वारा वेब पोर्टल्स पर दिए गए योगदान ने हिन्दी साहित्य को एक नए आयाम में प्रस्तुत किया है, जिससे वे साहित्यिक और शैक्षिक दृष्टिकोण से एक प्रेरणास्त्रोत बन गई हैं।

4. **दीपक शर्मा–** निठुराई और उदासीनता से भरी हमारी इस नई दुनिया के वासी यदि अपनी भावात्मक बुद्धि को तेज करना चाहते हैं, उसमें गतिवृद्धि लाना चाहते हैं तो उन्हें मधु संधु के 'आयुष' तथा 'गुड़िया' से अपना परिचय अवश्य ही कर लेना चाहिए। जिस अनूठे अंदाज में और जिस लाड़ से वह इन दो प्यारे बच्चों को इन्हीं नामों की अपनी उल्लसित कहानियों में पेश करती हैं, वह सर्वथा उल्लेखनीय है।

ISBN: 978-93-6423-646-1

अयन प्रकाशन

जे-19/39, राजापुरी, उत्तम नगर,
नई दिल्ली-110059

मोबाइल : 9211312372, 8920573345

e-mail : ayanprakashan@gmail.com
website : www.ayanprakashan.com

© : डॉ. दीप्ति

प्रथम संस्करण : 2025

मूल्य : 600.00 रुपये

Antarjal Ki Duniya Main Dr. Madhu Sandhu
Editor: Dr. Deepti

टाइपसेटिंग : अजेश भार्गव, दिल्ली. 9818747603
मुद्रक : एस. पी. कौशिक एंटरप्राइज़ेज़, शाहदरा, दिल्ली-110093

अनुक्रम

(क) कहानीकार

1. मानवाधिकारों की प्रखर प्रहरी डॉ. मधु संधु — ***डॉ. दीप्ति*** 15
2. अभिव्यक्ति में मधु संधु — ***कादंबरी मेहरा*** 30
3. अंतर्जाल की दुनिया में डॉ. मधु संधु का जादुई संसार — ***डॉ. नितीन उपाध्ये*** *34*
4. छोटी कहानियों के बड़े संदेश — ***प्रो. उल्फत मुखीबोवा*** 40
5. डॉ. मधु संधुः सृजन और शोध की अनुपम अद्वितीय यात्रा — ***डॉ. मौना कौशिक*** 45
6. डॉ. मधु संधु और अंतर्जाल — ***दीपक शर्मा*** 51
7. बिगडैल औरत बनाम स्त्री अस्मिता — ***डॉ. राकेश प्रेम*** 54
8. प्रयोगधर्मी कहानीकार डॉ. मधु संधु — ***डॉ. संजय चौहान*** 57
9. सूक्ष्म भाव लोक की विराटता-मधु संधु की लघु कथाएं — ***डॉ. अनिता गोयल*** *65*
10. समाज के सत्यों का उद्‌घाटन करतीं डॉ. मधु संधु की लघु-कथाएं — ***डॉ. कंचन गोयल*** 78
11. रचनाकार में प्रकाशित लघु-कथाएँ — ***डॉ. जसभाई पटेल*** 91

(ख) कवयित्री

12. स्त्री जाति का नेतृत्व करतीं डॉ. मधु संधु की कविताएँ — ***सुधा ओम ढींगरा*** *97*
13. भावुक, प्रबुद्ध एवं विवेकशील कवयित्री मधु संधु — ***सुरेश पाण्डेय*** 103

छोटी कहानियों के बड़े संदेश

–प्रो. उल्फत मुखीबोवा

डॉ. मधु संधु की बेहद सरल, छोटी-छोटी कहानियाँ जीवन की अद्‌भुत घटनाओं को चित्रित करते हुये पाठक वृंद को बड़े संदेश प्रेषित करती हैं। लेखिका का लक्ष्य इनके माध्यम से बदलती जीवन शैली, चिंतन पद्धति, स्वभाव को प्रकट करते हुये पाठक का इस ओर ध्यान केंद्रित करना है।

उनकी 'अभिसारिका'[1] कहानी में जीवन की एक छोटी सी घटना का वर्णन किया गया है। इस छोटी सी घटना के माध्यम से लेखिका ने पाठकों के सामने स्त्री-पुरुष के रिश्ते के सबसे महत्वपूर्ण पक्ष, परिवार के सदस्यों से उनके रिश्तों को उजागर करने का प्रयास किया है। फोन पर एक कॉल आई, जिसका ओबेरॉय काफी समय से इंतजार कर रहे थे। फोन पर एक संक्षिप्त बातचीत के बाद घर पर अकेले बैठने से ऊबे मि. ओबेरॉय दूसरे बेटे के पास रह रही पत्नी से मिलने चल पड़ते हैं। पारिवारिक जीवन, पति-पत्नी के रिश्ते, बच्चों के माता-पिता के साथ रिश्ते और प्यार की भावना एक व्यक्ति के लिए सबसे जरूरी भावनाएं हैं। इस तरह की छोटी-छोटी घटनाओं को बिना किसी अतिश्योक्ति के व्यक्त करने में लेखिका की कुशलता नजर आती है–

"यह साठ वर्षीय पत्नी छोटे के पास और उसका तिरसठ वर्षीय पति पिछले पाँच वर्षों से बड़े के पास रह रहे हैं। बड़े की पत्नी नौकरी में है, इसलिए घर में वे खाली बोर होते रहते हैं। छोटे की पत्नी महीने में एक-आध बार किट्‌टी पार्टी या कहीं अन्य निकलती है और दोनों उसी को सार्थक करने में जुट जाते हैं।"

'बेचारा अलाद्दीन'[2] लघु कथा का विषय देश में होने वाले चुनाव से संबद्ध है। चुनाव में जीतनेवाला अपने आप को अलाद्दीन ही समझता है। वह कुछ दिनों के लिये मिलने वाली कुर्सी पर इतना चिपक जाता है कि

अगले चुनाव में कुर्सी से हट जाने तक अपने आप को इस भ्रम से मुक्त नहीं कर पाता–

"मंत्री पद संभालते ही वे अलादीन हो गए। कुर्सी उनके लिए चिराग बन गई। अलादीन को तो चिराग घिसना पड़ता था, पर उनका यह चिराग और जिन्न सरकार के स्थायित्व तक सक्रिय थे।

पता उन्हें तब चला जब अगला चुनाव आने पर उन्हें बिठा दिया गया और उन्हीं के एक जिन्न को खड़ा किया गया, जिताया गया, मंत्री बनाकर अलादीन बनाया गया।"

'बिगडैल औरत'[3] कहानी का उद्देश्य नारी का आधुनिक स्वरूप चित्रित करना है। दरअसल अगर एक महिला चाहे तो अपनी दुनिया बदल सकती है। उसे उसके अधिकारों से वंचित नहीं किया जा सकता। भले ही पिता पुचकार कर, भाई डांटकर, पति चिल्लाकर, बेटा विरोध करके, गुरु मंत्र वादी शांत स्वर में समझायें, लेकिन उसकी इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्प उसे अस्तित्व हीन या अधिकार वंचित नहीं कर सकते–

"पिता ने पुचकार कर, भाई ने लताड़ कर, पति ने गुर्रा कर, पुत्र ने तरेर कर, कवियों ने दूध पानी का हवाला देकर, गुरुजनों ने मन्त्रवादी शांत स्वर में, वैज्ञानिकों ने अबला कहकर उसे उसकी औकात बताई, पर बिगडैल औरत मानी नहीं।

"उसने कहा औरत तो आटे का दीपक है, घर में चूहे और बाहर आते ही कौवे नोच खाएँगे। वह दीप ज्योति से दीप ज्वाला बन गई।"

'अनुशासन'[4] कहानी में लेखिका ने विद्यार्थी और क्लर्क के माध्यम से अनुशासनहीनता के मुद्दे को उजागर किया है। कहानी के क्लर्क को किसी भी कर्मचारी या अधिकारी से कोई सम्मान नहीं मिलता। यह स्थिति उसे परेशान करती है। ऊपर से नवागुंतक विद्यार्थी भी बिना इजाजत के कमरे में घुसकर लापरवाही से पूछताछ करते हैं। ऐसे में हीनभाव ग्रस्त कलर्क प्रवक्ताओं के विषय में अनुचित शब्दों का प्रयोग कर अपनी कुंठाओं को व्यक्त करते हुये दूसरे लोगों का भी मनोरंजन करता रहता है–

"एक नवागंतुक विद्यार्थी ने– "मे आई कम इन सर" कहकर कमरे में प्रवेश किया और विनम्र स्वर में कुर्सी पर बैठे क्लर्क से कहा– "सर एड्मिशन डेट्स पूछनी थी।"

"जाओ डॉ. जुनेजा से पूछ लो। वे कमरा न. 204 में इसी काम के लिए बिठाये हुये हैं।"

पास बैठे जूनियर प्रवक्ताओं की बांछे खिल गई।

चाय का घूंट सुड़कते हुये डॉ. भाटिया बोले, "वाह भाई वीर सिंह! आधा किलो खून बढ़ा दिया तूने एक ही झटके में।"

'लेडी डाक्टर'[5] कहानी में माँ, भाई और बहन की सरल बातचीत के माध्यम से पुरुषीय विचारधारा की संकीर्णता को दर्शाया गया है। ऐसी कोई अवधारणा नहीं है कि एक अच्छा डॉक्टर बनने के लिए आपका पुरुष होना अनिवार्य है। कहानी में बेटे/मर्द को महिला डॉक्टर के पास जाने की समस्या है और यह विचार लेखिका ने माँ और बेटे की बातचीत के माध्यम से प्रस्तुत किया है। कहानी आज के मर्दों की रूढ मानसिकता दिखाती है–

"बहन ने पानी का गिलास पकड़ाते हुये पूछा, "भैया तबीयत ज्यादा खराब लगती है। दवा समझा दें, मैं समय पर देती रहूँगी।"

"पर दवा मिली कहाँ? दोनों डॉ. मीटिंग पर गए हुये थे।"

माँ विस्मित थी– "लल्ला मैं अभी डॉ. को काँख का गूमड़ दिखा कर आई हूँ। इतनी जल्दी निकल गई क्या।"

"तो क्या मैं लेडी डॉ. के पास जाता।" "आहत मर्दानगी से वह बौखला उठा।"

'थैंक्यू'[6] कहानी रेस्तरां और घर में तैयार किए गए भोजन के प्रति दो अलग-अलग दृष्टिकोणों का वर्णन करती है। बाहर रेस्तरां में परोसे गए भोजन के लिए सभी धन्यवाद कहते हैं, भले ही ऑर्डर देर से और खाना ठंडा लाया गया हो और घर में भले ही हर भोजन समय पर, स्वादिष्ट ढंग से तैयार किया गया हो, डाइनिंग टेबल तरह-तरह के खानों से भरी हो, फिर भी धन्यवाद कहने वाला कोई नहीं है, क्योंकि यह घर पर हो रहा है, इस लिये इस मेहनत की कोई कीमत नहीं है। कहानी में लेखिका आज के सभ्य इन्सान की असभ्य मानसिकता दिखा रही है–

"विभा ने खाना बनाया, डाइनिंग टेबल पर लगाया और पति बच्चों की प्रतीक्षा करने लगी। पालक पनीर, दही बड़े, कढ़ाई गोभी, गाजर का हलवा, पूड़ियाँ वगैरह। अमित ने ढेर सारी गोभी प्लेट में डाली और आलू जूठन

की तरह फेंक दिये। निधि ने दही बड़े से नाक सिकोड़ा। कृति ने एक कम फूली पूड़ी को ऐसे पकड़ा, जैसे दोष बनाने वाले का हो। खाने के बाद गाजर का हलवा ऐसे प्लेटों में डाला जा रहा था, मानों उनके साथ ओवर इटिंग का कोई षड्यंत्र रचा जा रहा हो। विभा पर खाना खाने का अहसान लादते हुये सभी धीरे धीरे उठ गए। किसी के पास उसके लिए थैंक्यू नही था।"

'वसीयत'[7] कहानी में बड़ा बेटा हृदय रोग से पीड़ित हो अस्पताल पहुंची माँ की सारी संपत्ति अपने नाम पर लिखकर उस पर माँ का हस्ताक्षर करवा लेता है। माँ अच्छे स्वास्थ्य के साथ घर लौट आती है और जीवन की ऐसी कड़वी सच्चाई का सामना करने के बाद कोई भी वसीयत न करने का फैसला कर लेती है। इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने इस तथ्य के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण व्यक्त किया है कि कुछ बच्चे अपने माता-पिता की अपेक्षा उनकी विरासत में ज्यादा रुचि रखते हैं।

"उस रोज अस्पताल का कामन वार्ड कचहरी का प्रांगण बन गया, जब बड़े बेटे ने अस्पताल में हार्ट अटैक से मरणासन्न पड़ी माँ के हस्ताक्षर अदालती कागजों पर करवा स्वयं को माँ का एकमात्र वारिस घोषित कर दिया।

अब नाते रिश्ते के लोगों और पड़ोसियों को फर्ज अदायगी के नाम पर मात्र मनोरन्जन करना था, मजा लेना था। छोटे बेटे के पहुँचते ही इस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण अस्पताल में बेहोश पड़ी माँ के बिस्तर से गाँव के बड़- पीपल के पेड़ तले तक होने लगा।

वहाँ से सही-सलामत घर पहुंची माँ ने जिंदगी के इस रफ एंड टफ पक्ष से दो-चार होने पर कोई भी वसीयत न करने का निर्णय लिया। अब दोनों बेटों के पास किसी भी अंतिम हार्ट अटैक की प्रतीक्षा के इलावा कोई चारा न था।"

"रुआब"[8] कहानी पिता की असमय मृत्यु से मिली धनराशि तथा अनुकंपा नियुक्ति द्वारा जीरो से हीरो बने पुत्र को चित्रित करती है। लेखिका कहती है कि अचानक धनाढ्य हो जाने पर आदमी आपा ही खो देता है। वह कार लगाकर गली रोक सकता है, छत पर जेनरेटर फिट करवा पूरे मुहल्ले को धुआँ-धुआँ कर सकता है–

"बड़ा रुआब था उसका–घर में, गली–मुहल्ले में, अस्पताल में। ...पिता की असमय मृत्यु ने उसे तिहरे लाभ में रखा। स्थानीय अस्पताल में अनुकम्पा नियुक्ति हो गई और वह सरकारी कर्मचारी बन गया। पिता के पी.एफ. ग्रेचुएटी से कार ले ली और लोग उसे कर्मचारी नहीं, अधिकारी कम्पाउडर नहीं, डॉक्टर समझने लगे। छत पर एक पुराना जनरेटर और मशीन खरीदकर ऐनकों के शीशे बनाने का काम खोल लिया। दो कारीगर आने लगे और वह सरमायादार बन गया। ...बस चले तो वह गली में ही टीन की छत डालकर कार का पोर्च बना ले, जनरेटर पड़ौसियों की खाली छत पर रखवा दे तथा दो मशीनें और लगवा मुहल्ले को जनरेटर के काले धुएँ और शोर से भर इंडस्ट्रियल एरिया बना दे।"

इन लधुकथाओं में आज का समाज है, आसन्न जीवन दर्शन है, रिश्तों के गुंझल, मान–अपमान, नारी विमर्श, पुरुषीय अहं, दफतरी जीवन, सियासत का दर्प, अर्थतंत्र– जैसे अनेकानेक पक्षों को समेटते थोड़े में बहुत कहने का साहित्यिक प्रयास है।

संदर्भ–सूची

1. डॉ. मधु संधु, अभिसारिका, http://gadyakash.org> श्रेणी:कहानी
2. वही, बेचारा अलादीन, वही
3. वही, बिगडैल औरत, वही
4. वही, अनुशासन, वही
5. वही, लेडी डॉक्टर, वही
6. वही, थैंक्यू, वही
7. वही, वसीयत, वही
8. वही, रुआब, वही

ताशकन्द राजकीय प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय,
ताशकन्द, उज्बेकिस्तान।
मोबाइल: 998946443037

❑